आर्यसमाज की आफत

समाजी और नमाजी

सन् १९६९ में होनेवाले 'सनातन धर्म विजय महोत्सव' काशी के अवसर पर लिखा गया। यह वही लेख है जिसका आर्यसमाज के पास कोई उत्तर नहीं।

लेखक—श्री विश्वम्भर शास्त्री गौड़

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, स्थायी अध्यक्ष 'अखिल भारतीय संस्कृत छात्र संघ,' वाराणसी। तथा प्रधान मन्त्री 'सनातन धर्म-दिग्विजय मण्डल, भारतवर्ष।

प्रकाशक

श्री सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी शास्त्री (जबलपुर म० प्र०)

अध्यक्ष—अखिल भारतीय संस्कृत छात्रसंघ, वाराणसी

प्रथमावृत्ति ११००]   मूल्य १५ पैसे   [सन् १९७१ रामनवमी

ईश्वर सनातन है। उसका संविधान भी सनातन है। अनादि माया के चक्कर में पड़े, सनातन जीव को जो संविधान सनातन ब्रह्म बना दे उसे सनातन धर्म कहते हैं। इस संविधान का मूल वेद है और स्मृति ग्रन्थों में इसका वर्गीकरण किया गया है। पुराण इस संविधानकी अनादि दलीलें हैं और इतिहास इसका परिचय मानवीय जीवन तक पहुँचा कर उसे देवत्व प्रदान कराता है। किसी भी ज्ञान के प्रति उसका प्रतियोगी ज्ञानकारण माना जाता है। अतः धर्म का ज्ञान कराने के लिये अधर्म के ज्ञान की भी अनिवार्यता स्थिर की गयी है। धर्म ज्ञान स्वरूप है और ज्ञान का प्रतिबिम्ब प्रकाश है। इसी प्रकार अधर्म अन्धकार की वह काली कोठरी है, जिसमें उल्लू तथा चमगादड़ आराम के साथ बसेरा करते हैं। सनातन ब्रह्म, सनातन जीव, अनादि माया का सम्यक ज्ञान सनातन संविधान से ही संभव होने के कारण—वेद को अपौरुषेय कहा जाता है।

समाजी और नमाजी का उद्भव

जीवों के दो भेद हैं। एक प्रकाश प्रिय और दूसरा अन्धकार प्रिय। अधर्म अन्धकारमय है। उसका प्रतिपादक साहित्य भी अपौ-रुषेय का विरोधी पौरुषेय है। अतः उसमें पदे-पदे दोष हैं। अधर्म का प्रतिपादन करने के लिये जिस साहित्य का सृजन हुआ उसके मानने वालों की भी दो शाखायें हुयीं। जिसकी एक शाखा का संस्थापन मुहम्मद साहब ने किया और अपने अनुयायियों का नाम मुसलमान रक्खा। मुसलमान सर्वाङ्ग में हिन्दुओं से आकृति में भिन्न दिखायी पड़ते थे। अतः वे जब हिन्दुओं पर किसी प्रकार का आक्रमण करते थे तो हिन्दू उन्हें पहिचान लेते थे और सावधान हो जाते थे। अतः हिन्दुओं की पहिचान में मुसलमान न आयें इस

उद्देश्य से हिन्दुओं के ही एक वर्ग को लेकर मुहम्मद साहब से लगभग सतरह सौ वर्ष बाद दयानन्द नामक एक गुप्त मुसलमान ने दूसरी शाखा की स्थापना की जिसका नाम दयानन्दी है। मुसलमानों को नमाज से बहुत प्रेम है। इस कारण नमाज पढ़ने वालों का सामूहिक नाम नमाजी हुआ। नमाजियों में भी शिया सुन्नी की तरह दो भेद और हुए। एक प्राचीन, दूसरा नवीन। जिस वर्ग का निर्देशन मुहम्मद साहब ने किया। वह शुद्ध नमाजी कहाया। और जिस समाज का विधर्मीकरण स्वामी दयानन्द ने किया उस वर्ग विशेषका नाम समाजी और नमाजी हुआ।

जिस प्रकार धर्म का भेद अधर्म है। इसी प्रकार अधर्म की भाषा भी एकदम उलट गयी और उस उलटी हुई भाषा का नाम अरबी रख दिया। रब शब्द का अर्थ, धर्म तथा ईश्वर होता है अर्थात् धर्म तथा ईश्वर का समर्थन न करने वाली भाषा का नाम अरब हुआ और अरब का अपभ्रंश होते-होते अरबी हो गया। इसी कारण कुरान ने हिन्दू धर्म के विरोधी नियमों का समर्थन किया और ईश्वर की जगह मुहम्मदसाहब को लाकर खड़ा कर दिया। मुहम्मदसाहब पैगम्बर हैं, ईश्वर नहीं। दूसरी शाखा समाजी और नमाजी की है। दयानन्दने सोचा यदि अपनी शाखा की भाषा हमने भी अरबी ही रक्खी तो हो सकता है भाषा की एकता से नवनिर्मित होने के कारण हमारी शाखा मुहम्मदसाहब वाली पुरानी शाखा में मिल गयी तो हमारा नामोंनिशां ही मिट जायगा। अतः दयानन्दने अपनी भाषा अरबी न रखते हुए संस्कृत रक्खी और वेद मन्त्रों की निर्मम हत्या कर एक पुस्तक प्रकाशित करायी जिसका नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' है।

नमाज और नमाजी

शुक्रवार के दिन सायंकाल मुहम्मदी मुसलमान इकट्ठे होकर

विना आचमन मार्जन के नीचे ऊपर को जो बैठते उठते हैं उसे नमाज कहते हैं। एक मौलवी या मुल्ला समूह के आगे खड़ा होकर उठा बैठ करता है। पश्चात् उसकी नकल पीछे वाले करते हैं। रविवार के दिन दयानन्दी मुसलमान सायंकाल के समय इकट्ठे होकर बिना जल के ही जो आँख मिचौनी करते हैं उस आँख मिचौनी करनेवाले गुट विशेष को समाज कहते हैं। इनमें मौलवी के स्थान पर जो रहता है उसे महाशय कहा जाता है और उसके आँख मीचने पर जो पास में बैठे हुए आँख मिचौनी करते हैं उसे दयानन्दी नमाज कहते हैं।

मुहम्मदी मुसलमान अपने किसी भी कार्य में—वेद मन्त्र नहीं बोलता उसका तिरस्कार करता है। दयानन्दी मुसलमान कुछ संस्कृत वाक्यों को बोल वेद का उपहास करता है। मुहम्मदी मुसलमान मुहम्मद साहब के शब्दों को बोलते हैं और दयानन्दी मुसलमान दयानन्द के बनाये जाली मन्त्र का ढोंग फैलाते हैं। मुहम्मदी मुसलमानों के उपासना गृह में मूर्ति नहीं रहती अतः उसे मसजिद कहते हैं। उसके पीछे के भाग में हलके आकार का एक चिन्ह होता है। मुहम्मद साहब के अनुयायियों को मुहम्मद साहब पर ईमान लाना होता है। दयानन्दी मुसलमानों के उपासना गृह में भी भगवान् की मूर्ति नहीं रहती। उसमें पेट फुलाये दयानन्द का एक फोटो रक्खा रहता है। दयानन्द बड़ा जिद्दी था। दयानन्द के उपासना गृह को लोग मत की जिद्द या मतजिद कहते हैं। जिसका अपभ्रंश—मज्जिद है। दयानन्द हवन का फल वायु की शुद्धि मानता है और दयानन्दी हर रविवार के दिन अपनी मज्जिद में आग में डालडा छोड़ता है। इस सम्बन्ध में स्वर्गीय पंडित कालूराम शास्त्रीजी की एक बड़ी फिट् कल्पना है। वे कहते हैं—कि सनातनियों के मन्दिर में हलवा पूड़ी का नित्य भोग लगता है अतः

सनातनियों के देवता उनके मन्दिरों में माल खाकर मलवा मज्जिदों में छोड़ जाते हैं। मज्जिदों की वायु बिगड़ जाती है। अतः दयानंदी हर रविवार को मज्जिद की सफाई करते हैं। इस प्रकार दयानंदियों की मज्जिदें सनातनी देवताओं के शौचालय हैं। और शौचालय की सफाई करने वाले दयानन्द पंथी भंगी सिद्ध हो जाते हैं। जिस प्रकार मुहम्मद साहब के अनुयायियों को उनपर ईमान लाना लाजिम है इसी प्रकार दयानन्दियों के लिये दयानन्द के माथे के फितूर को भी अपनी खोपड़ी पर रखना पड़ता है।

मूर्तिपूजा और नमाजी समाजी

मुहम्मदी नमाजी हस्से हुसैन की एक लम्बी कागज की मूर्ति बनाता है और उसके सामने फातिहा पढ़ता है—"नजरों से आस्मां को हिला रहे हुसैन" और चिल्लाता है—'हाय! हुसैन हम न हुए।' कुरान शरीफको पूजता है। रोजा रखता है। कब्रों के आगे शिर झुकाता है। दयानन्दी नमाजी भी कम नहीं, यह महाशय दयानन्द का चित्र सजाता है। उसके सामने आँख मूंदकर स्वर अलापता है—"वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।" लोहा लक्कड़ पूजता है। नरक चतुर्दशी के दिन मातम मनाता है। तथा कराँची में जाकर मिस्टर जिन्ना की कब्र पर शिर पटकता है।

पितर और नमाजी

मरने के बाद मुहम्मदी मुसलमान कब्र पर भोजन रखते हैं, मरे हुए का चालीसा करते हैं। उसकी आत्म शान्ति के लिये खुदा से इबादत करते हैं। किन्तु यह सब कुछ करते हुए भी उनके लिए पिण्डदान तथा जलदान नहीं करते। दयानन्दी मुसलमान भी—किसी के मर जाने पर उसे भूत् कहते हैं। उसके लिये जलदान

नहीं करते और न श्राद्ध ही करते हैं। क्योंकि दोनों ही ठहरे तो नमाजी ही।

शिखा की सफाई

मुहम्मदी मुसलमान चोटी नहीं रखता। वह हिन्दू वेष का विरोध करता है। किन्तु विरोध करते हुए भी टोपी के ऊपर झब्बे के रूप में चोटी स्वीकार करता है। इधर दयानन्दी मुसलमानों को मूहम्मदी मुसलमानों से अलग रखने के लिए दयानन्द टोपी के नीचे भी शिखा कटवाना लिखता है। दशम समुल्लास सत्यार्थ—प्रकाश के पृष्ठ १६२ में लिखा है कि ग्रीष्म देश में सबको शिखा कटवा देनी चाहिये क्योंकि शिखा रखने से खोपड़ी की गर्मी बढ़ जाती है। जिससे वुद्धि कम हो जाती है। सारांश निकला कि—शिखा रखने से वुद्धि कम और कटवाने से बुद्धि वढ़ती है। जवकि वेद में लिखा है कि चोटी रखने से बुद्धि तीक्ष्ण होती है। यह दयानन्दी नमाजियों की नवीन फिलास्पी का एक विचित्र नमूना है।

दूध का बराव

मुहम्मदी नमाजियों के यहाँ जब विवाह होता है तव दूध का बराव होता है। अर्थात् सगे भाई वहिन में शादी नहीं होती, किन्तु दयानन्दी 'समाजी और नमाजी' इस नियम में संशोधन कर अपनी मान्यता इस प्रकार स्थिर करते हैं कि जिसके साथ विवाह होने वाला है वह कन्या दूर में रहने वाली होनी चाहिये। दूर में सगी बहिन भी रह सकती है वेटी भी रह सकती हैं। वचपन में बच्चों को छोड़ माता भी दूर जाकर रह सकती है। अतः दयानन्दियोंका—

"कलि काल विहाल किये मनुजा।
नहिं मानइ कोइ अनुजा तनुजा॥"

से भी एक कदम आगे है। इस पन्थ में गोत्र का अड़ंगा बेकार है। क्योंकि गोत्र की सार्थकता जन्मना जाति मानने पर है न कि कर्मणा जाति मानने पर। अतः दूर स्थान में रहने वाली अपनी सगी बहिन बेटी के साथ दयानन्दी अपना मुँह काला कर सकते हैं। यह दयानन्दियों के काले कारनामें की एक करतूत है।

गो हत्या

मुहम्मदी मुसलमानों के यहाँ दो प्रकार के जानवर हैं। एक हराम दूसरा हलाल। सूअर हराम है अतः उसकी कुर्बानी नहीं हो सकती। साथ ही गौ की गिनती हराम में तो नहीं आती किन्तु उसें मारना चाहिये ऐसा भी इनके ग्रन्थ में नहीं लिखा। इस प्रकार ये लोग जो गौ मारते हैं वह केवल हिन्दुओं को दुःखी करने के लिये ही मारते हैं। दयानन्दी मुसलमानों के यहाँ गौ को मारना लिखा है। गो हत्यारा दयानन्द प्रथमावृत्ति हत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ ३०३ में गौ मारना लिखता है। इसी आधार पर दयानन्दियों में पहिले दो पार्टियाँ थीं। एक मांस पार्टी दूसरी घास पार्टी। मांस पार्टी वाले नित्यप्रति गो मांस खाते थे।

व्यभिचार

सुनते हैं—मुहम्मद साहब जब थोड़ी अवस्था के थे तब एक वुढ़िया से विवाह किया और जब पैंसठ वर्ष के हुए तब एक कन्या से विवाह हुआ। दयानन्द ने संन्यासी का रूप धारण करके भी अपनी बचपन की आदत न छोड़ी और रमा नामक वेश्या से फँस गये। रमा से पत्र व्यवहार होता था। जिसके आधार पर पण्डित श्री अखिलानन्द कवि रत्नजी ने "रमा महर्षि सम्वाद" नामक काव्य का प्रणयन किया है जो समाजी और नमाजियों के लिये शिर दर्द है।

'सन्मार्ग' वाराणसी, गुरुवार २५ दिसम्बर १९६९ ई०

इसी अवसर पर आर्यसमाज ने लिखित शास्त्रार्थं प्रारम्भ किया था जिसके उत्तर में ऋषिकल्प सनातन धर्म के सुप्रसिद्ध लेखक गुरुवर्य पण्डित श्री लालविहारी शास्त्री मिश्रजी ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित करायी थी जिसका आर्यसमाज से आज तक कोई उत्तर नहीं हुआ। विज्ञप्ति अभी भी चुनौती बनी हुई है।

श्री सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी शास्त्री
(जबलपुर म० प्र०)

अध्यक्ष—

'अखिल भारतीय संस्कृत छात्र संघ'
वाराणसी